पंजाब की लोक-कथाएँ

○

प्रीतमसिंह 'पंछी'

東京外国語大学
157749
47. 3. 31
図書館蔵書

寄贈
昭和46
東外大・東洋文化研
合同海外学術調査団
氏

1963
आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

"उनके अन्दर हमें अपने कठोर श्रम को हल्का करने की प्राचीन मानव की कामना, उत्पादन बढ़ाने की लालसा, अपने चतुष्पद और द्विपद शत्रुओं को परास्त करने की इच्छा और शब्द-शक्ति से भूत-प्रेत का अपसरण करने वाले जादू-टोने और मंत्रों से प्रकृति के अंध प्रकोपों पर अपना प्रभाव डालने की चेष्टा मिलती है।"

मेरे मित्र प्रीतमसिंह 'पंछी' ने बड़े परिश्रम से पंजाब की लोक-कथाओं का संग्रह किया है। इनमें आपको उपकथित सभी बातें मिलेंगी। भोला और लच्छी जब अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं तो हमारा मन हर्ष से भर जाता है। लोक-कथाओं की एक विशेषता यह भी है कि उनकी भाषा बड़ी सुबोध, सरल और सशक्त होती है। हमें पंजाब की इन लोक-कथाओं के अनुवाद में भी यह गुण सुरक्षित मिलता है।

—हंसराज 'रहबर'

क्रम

1.	नदी का राजकुमार	1
2.	बैंगन से राजकुमारी निकली	5
3.	नेकबख्त	12
4.	सौ साल की नींद	19
5.	गुल बादशाह	22
6.	ठग और लच्छी	28
7.	भोला	32
8.	कबूतरी और कौआ	38
9.	कबूतरों का जोड़ा	42
10.	सुनहरे पक्षी	46